DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण
LIVE 26-04-2024 05:00 PM

भाषाओं का वर्गीकरण

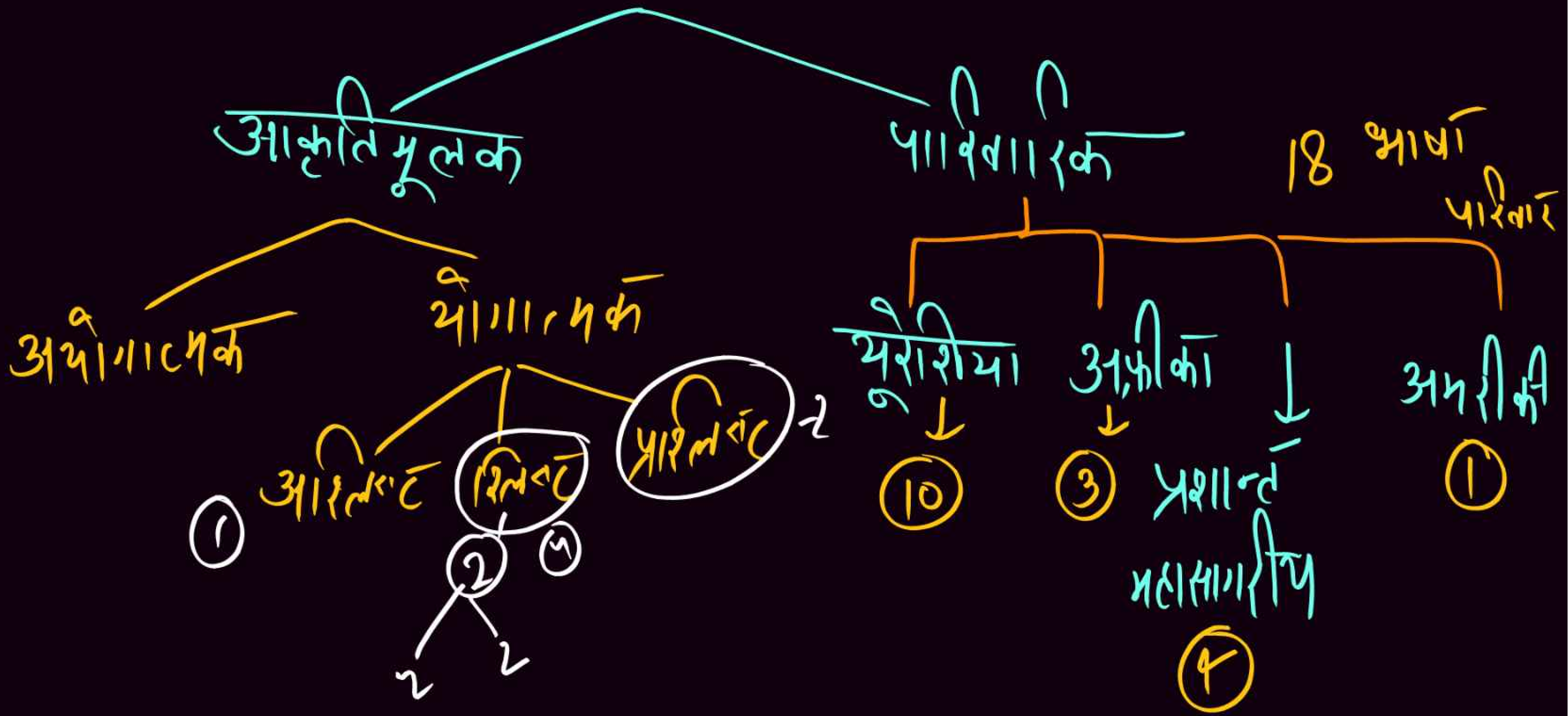

आकृतिमूलक
पारिवारिक
18 भाषा परिवार
अयोगात्मक
योगात्मक
अश्लिष्ट
श्लिष्ट
प्रश्लिष्ट
यूरेशिया
10
अफ्रीका
3
प्रशान्त महासागरीय
4
अमरीकी
1

पारिवारिक वर्गीकरण

(Geneological Classification

पारिवारिक वर्गीकरण का आधार

पारिवारिक वर्गीकरण के निम्नलिखित चार आधार माने गए हैं-

- ✓ स्थानिक समीपता,
- ✓ शब्दों की समानता,
- ✓ व्याकरण - साम्य, तथा
- ✓ ध्वनि - साम्य ।

1. स्थानिक समीपता: आस पास के क्षेत्र में बोली जानेवाली भाषाएँ प्रायः एक ही परिवार की होती हैं । जैसे भारत में हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि । इसी प्रकार दक्षिण की भाषाएँ तमिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़ । इसलिए भौगोलिक समीपता को पारिवारिक वर्गीकरण का आधार माना गया है। किन्तु केवल स्थानिक समीपता पारिवारिक वर्गीकरण का कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। कई बार आसपास के क्षेत्र में भिन्न परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे 'मराठी और तेलुगु' या 'मराठी और कन्नड़' या 'तेलुगु और उड़िया' यद्यपि भौगोलिक दृष्टि से एक-दूसरे के नितान्त समीप हैं परन्तु ये भिन्न भाषाएँ हैं ।

इसके विपरीत, हिन्दी और यूरोप की भाषाएँ दूर-दूर की भाषाएँ हैं, फिर भी ये दोनों एक ही परिवार की भाषाएं हैं। निष्कर्ष यह है कि भाषाओं की स्थानिक समीपता एक आधार अवश्य है किन्तु केवल इसी आधार पर किन्हीं भाषाओं का एक की परिवार की मानना भ्रामक है ।

2. शब्दों की समानताः शब्दों की समानता के आधार पर भाषाओं के परिवार का निर्णय करने में सहायता मिलती है । प्रायः पारिवारिक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों में समानता एक परिवार की द्योतक है ।

माता-पिता, भाई-बहिन आदि पारिवारिक सम्बन्धों के द्योतक शब्द; आग, पानी, अन्न, चूल्हा आदि सर्वोपयोगी वस्तुओं के वाचक शब्द; में, तू, वह आदि सर्वनाम शब्दः एक, दो, तीन आदि संख्यावाची शब्द; तथा खाना-पीना, उठना-बैठना आदि सर्वसामान्य क्रियावाची शब्दों की समानता एक परिवार के द्योतक हैं। उदाहरण के लिए - भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं में 'पिता' पारिवारिक सम्बन्ध-वाचक तथा 'सात' संख्या वाचक शब्द इस प्रकार हैं-

संस्कृत	फारसी	ग्रीक	लैटिन	जर्मन	अंग्रेजी	हिन्दी
पित	पिदर	Pater	Pater	Vater	Father	पिता
सप्त	हफ्त	hepta	Septem	Sieben	Seven	सात

इन दोनों शब्दों की समानता के आधार पर माना गया है कि उपर्युक्त सभी भाषाएँ एक ही परिवार (भारोपीय) की भाषाएँ हैं। इन शब्दों में थोड़ा-बहुत ध्वनि - सम्बन्धी भेद है जो ध्वनि-नियमों के अनुसार ही है, जिससे उनकी समानता का खण्डन नहीं होता है ।

केवल ध्वनि साम्य के आधार पर शब्दों को एक परिवार का नहीं माना जा सकता । ध्वनि के साथ अर्थ - साम्य का होना भी आवश्यक है जो ध्वनि-साम्य तो रखते हैं, किन्तु अर्थ - साम्य नहीं रखते उन्हें एक परिवार का नहीं माना जा सकता। जैसे, हिन्दी का 'मेल' तथा अंग्रेजी का mail हिन्दी का फूल और अंग्रेजी का fool ध्वनि साम्य तो रखते हैं परन्तु अर्थ साम्य नहीं। इसलिए इन शब्दों को एक परिवार नहीं कहा जा सकता।

ध्वनि साम्य और अर्थ साम्य होने पर भी सहसा यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि ऐसे शब्द एक ही परिवार के हैं। ध्वन्यात्मक शब्द भी संयोग से एक जैसे हो सकते हैं जैसे बिल्ली के लिए म्यांऊ शब्द अनेक भाषाओं में मिलता है। हिन्दी का भौं भौं और अंग्रेजी का Bow-Bow में ध्वन्यात्मक अनुकरण के कारण समानता है।

3. व्याकरण-साम्य: व्याकरण साम्य भाषाओं के एक परिवार का होने का सबसे प्रबल आधार है। व्याकरण - साम्य से तात्पर्य है, पदरचना तथा वाक्य-रचना की प्रक्रिया में समानता । अतः शब्दों की समानता से अधिक महत्व व्याकरण - साम्य का है। क्योंकि, शब्दों का आदान-प्रदान होने पर भी सम्पर्क में आने वाली हिन्दीं भी भाषाओं में व्याकरण - साम्य नहीं हो पाता है। उसकी पद-रचना तथा वाक्य-रचना की शैली अपनी ही रहती है। उदाहरण के लिए - हिन्दी मैं अंग्रेजी शब्दों के साथ व्याकरण हिन्दी का ही प्रयुक्त होता है। जैसे स्कूलों, आदि ।

अतः जहाँ शब्दों की समानता से किन्हीं भाषाओं के एक परिवार का होने की मात्र सम्भावना प्रकट होती है, वहाँ व्याकरण - साम्य से उस सम्भावना की पुष्टि हो जाती है ।

4. ध्वनि-साम्यः किसी एक परिवार की मूल ध्वनियाँ यद्यपि कालान्तर में स्थान भेद के कारण परिवर्तित हो जाती हैं परन्तु वह परिवर्तन एक नियमित दिशा में होता है। उदाहरणस्वरूप भारोपीय भाषा की मूल ध्वनियाँ स्थान भेद के कारण भिन्न-भिन्न रूपों में मिलती हैं परन्तु यह परिवर्तन एक नियमित दिशा में हुआ है। ग्रिम-नियम आदि ध्वनि - नियमों का विचार करके ही इन ध्वनियों को एक मूल ध्वनि के परिवर्तित रूप माना गया है। अतः ध्वनि - साम्य को भाषाओं के एक परिवार के होने का आधार माना गया है ।

'डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा' ने 'अपेक्षाकृत निर्विवाद और प्रमुख भाषा-परिवारों की संख्या 18 मानी है ।

सम्पूर्ण भाषाओं को, भौगोलिक आधार पर, पहले चार खण्डों में विभाजित किया है,

जैसे- (1) यूरेशिया खण्ड
(2) अफ्रीका खण्ड
(3) प्रशान्त महासागर खण्ड
(4) अमरीका खण्ड

इसके पश्चात् इन विद्वानों ने उपर्युक्त खण्डों में अनेक भाषा-परिवारों की गणना की है।

युरोशीया (यूरोप और एशीया)

यूरेशिया खण्ड

1. भारत यूरोपीय परिवार । भारोपीय => अंत
2. द्राविड़ परिवार ।
3. बुरूशस्की परिवार ।
4. यूराल - अल्ताई परिवार ।
5. काकेशी परिवार ।
6. चीनी परिवार ।
7. जापानी - कोरियाई परिवार ।

8. उत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार ।

9. बास्क परिवार ।

10. साभी - हामी परिवार (सामी- हामी परिवार की गणन यूरेशिया तथा अफ्रीका इन दोनों खण्डों में की जाती है

अफ्रीका खण्ड

11. सूडानी परिवार ।

12. बन्तू परिवार ।

13. होतेन्तोत - बुशमैनी परिवार ।

प्रशान्त महासागरीय खण्ड

14. मलय - बहुद्वीपीय परिवार ।

15. पापुई परिवार ।

16. आस्ट्रेलियाई परिवार ।

17. दक्षिण - पूर्व - एशियाई परिवार ।

अमरीका खण्ड

18. अमरीकी परिवार ।

उपर्युक्त भाषा - परिवारों का संक्षिप्त परिचय क्रमशः इस प्रकार है-

द्राविड़ परिवार

क्षेत्रः इसकी प्रमुख भाषाएँ और क्षेत्र ये हैं-

1. तमिल (मद्रास में)
2. तेलुगु (आन्ध्र प्रदेश में)
3. कन्नड़ (मैसुर में)
4. मलयालयम (केरल में) ।

बुरुशस्की (खज़ुना) परिवार

क्षेत्रः यह भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बोली जाती हैं। कुछ विद्वान् इसका सम्बन्ध मुंडा और द्राविड़ परिवार से मानते हैं ।

काकेशी परिवार

क्षेत्रः इसका क्षेत्र काकेशस पर्वत के समीप का प्रदेश है। यह क्षेत्र काला सागर और कैस्पियन समुद्र के मध्य में है। इसकी प्रमुख भाषाएँ है –

(1) उत्तरीवर्ग - कबडिन, सर्कासियन, चेचेनिश, लेगियन ।

(2) दक्षिणीवर्ग - जार्जियन, मिग्रेलियन, दासिश, स्वानियन |

मुख्य विशेषताएँ

1. ये भाषाएँ मुख्यतः अश्लिष्ट योगात्मक हैं परन्तु इनमें प्रश्लिष्ट योगात्मक के भी कुछ लक्षण मिलते हैं। धातु का शब्द में ही समावेश हो जाता है ।

2. शब्दरूप पूर्वसर्ग और प्रत्यय के योग से बनते हैं ।

3. उत्तरी काकेशी में स्वर कम और व्यंजन अधिक है ।

4. कारकों की संख्या बहुत अधिक है। 'अवर' आदि बोलियों में 30 कारक हैं।

5. कुछ बोलियों (चेचेनिश आदि) में 6 लिंग हैं ।

यूराल - अल्ताई परिवार

क्षेत्रः यह परिवार उत्तर में उत्तरी महासागर से लेकर दक्षिण में भूमध्य सागर तक, पश्चिम में अटलांटिक माहसागर से रूप में ओखोटस्क सागर तक। इसमें हंगरी, टर्की, फिनलैंड आदि भी आते हैं। क्षेत्र - विस्तार की दृष्टि से भारोपीय परिवार के बाद इसका दूसरा स्थान है।

प्रमुख भाषाएँ: इस परिवार के दो वर्ग है-

(क) यूराल वर्ग-

1. फिनो- उग्री (फिनलैंड, हंगरी, नार्वे में)
2. समोयद (साइबेरिया में)

(ख) अल्ताई वर्ग-

1. तुर्की (टर्की में)
2. मंगोली (मंगोलिया में)
3. मंचूई (मंचूरिया में)

संक्षिप्त परिचयः व्याकरण की दृष्टि से इनमें समानता है, अतः इन्हें एक ही माना जाता है परन्तु ध्वनियाँ और शब्द समूह पथक् हैं अतः कुछ विद्वान् इन्हें दो परिवार भी मानते हैं। यूराल वर्ग की फिनी को सुओमी (Finlish, Suomi) भी कहते हैं। यह फिनलैंड और उत्तरी रूस में श्वेत सागर तक फैली है। इसमें 13वीं सदी तक का प्राचीन साहित्य है । यह उच्चकोटि की साहित्यिक भाषा है। इसमें 'कलेवल' (Kaleval) राष्ट्रीय महाकाव्य है । उग्री (Ugric) हंगरी की भाषा है। इसकी मग्यार शाखा में अच्छा साहित्य है । समोयद (Samoyed) में कोई विशेष साहित्य नहीं है । यह साइबेरिया की बोली है। अल्ताई परिवार में तुर्की भाषा (Turkish) विशेष महत्व की है । परन्तु इसमें से 20वीं शताब्दी में अरबी शब्द निकाल दिए गए। अरबी लिपि को भी हटाकर रोमन लिपि कर दी गई।

प्रमुख विशेषताएं

1. दोनों परिवार की भाषाएँ अश्लिष्ट योगात्मक हैं। धातु या शब्द में प्रत्यय जुड़ते जाते हैं। धातु में परिवर्तन नहीं होता ।

2. शब्दों के बाद संबन्धवाचक सर्वनाम प्रत्यय के रूप में जोड़े जाते हैं ।

3. धातु या शब्दों के साथ प्रत्ययों का स्वर - साम्य इनकी मुख्य विशेषता है । प्रत्यय का स्वर धातु या शब्द के समान होगा ।

जैसे- बहुवचन - सूचक प्रत्यय - ler, lar | एव (घर) > एव्लेर । अत् (घोड़ा) > अत्-लर । यज् > यज - मक् (लिखना), सेव् > सेव् - मेक (प्यार करना) । यदि शब्द एक है तो प्रत्यय लेर होगा । अत् है तो प्रत्यय लर लगा ।

चीनी परिवार

तिब्बत - चीनी

क्षेत्र - इसका क्षेत्र है- सम्पूर्ण चीन, बर्मा, स्याम, तिब्बत ।

प्रमुख भाषाएँ-

1. चीनी (पूरे चीन में)
2. थाई या स्यामी (स्यामा या थाईलैंड में)
3. ब्रह्मी या बर्मी (ब्रह्मा या बर्मा में)
4. तिब्बती (तिब्बत में) ।
5. अनामी (कम्बोडिया, कोचीन चीन, टोंकिन में)

इस परिवार को 'तिब्बत - चीनी परिवार' और 'एकाक्षर परिवार' भी कहते हैं। बोलने वालों की संख्या की दष्टि से भारोपीय परिवार के बाद चीनी - परिवार का दूसरा स्थान है। यह परिवार चीन, स्याम, बर्मा, तिब्बत आदि में फैला हुआ है। इसके बोलने वालों की संख्या 1 अरब से अधिक है ।

1. चीनी: इसका सांस्कृतिक इतिहास 5 हजार वर्ष पुराना है। इसमें लगभग 4 हजार वर्ष पूर्व (ईसा पूर्व 2000 वर्ष) से साहित्य मिलता है। विश्वविख्यात दार्शनिक 'कनफूसियस' ने छठी शताब्दी ई. पू. में पुकिंग कहलाने वाले इतिहास ग्रन्थों का संपादन किया था । इसके लिखित और उच्चरित रूपों मे पर्याप्त अन्तर है । इसमें शब्द - संख्या 42 हजार के लगभग है। यह चित्र - लिपि में लिखी जाती है। यह दाएँ से बाएँ उर्दू आदि के तुल्य लिखी जाती हैं

2. थाईः इसको स्यामी भी कहते हैं। यह थाइलैंड में बोली जाती है। वर्मा और आसाम के कुछ भागों में भी बोली जाती है।

3. ब्रह्मी या वर्मीः बर्मा की भाषा है। वर्मी लिपि ब्राह्मी की पुत्री है ।

4. तिब्बतीः इसको भीट भाषा भी कहते हैं। इस पर भारत का भी बहुत प्रभाव है

5. अनार्मीः यह कम्बोडिया, कोचीन, चीन, टोंकिन की भाषा है। लिपि चीनी है। चीनी शब्द भी अधिक है । अब रोमन में भी लिखी जाती है ।

मुख्य विशेषताएँ-

1. ये भाषाएं अयोगात्मक हैं ।

2. इन भाषाओं में शब्द के स्थान का महत्व है ।

3. इन्हें एकाक्षर भाषा भी कहते हैं। पद-क्रम से अर्थनिर्णय होता है ।

4. सुर या तान (Tone) के आधार पर भी अर्थों का निर्णय होता है ।

5. चीनी में 4 सुर हैं- (1) निम्न, (2) निम्न - मध्य, (3) निम्न - उच्च, (4) उच्च ।

6. अर्थ की स्पष्टता के लिए प्रायः दो शब्दों को जोड़ देते हैं। जैसे- फू (पिता). मू (माता) चिन (संबन्धी), अतः फू-चिन (पिता). मू-चिन (माँ) |

7. व्याकरण का पूर्णतया अभाव है ।

8. अनुनासिक ध्वनियों की बहुलता है । ङ, ◌ा ध्वनियाँ बहुत अधिक मात्रा में प्रयुक्त होती हैं।

जापानी - कोरियाई परिवार

क्षेत्रः जापान और कोरिया

प्रमुख भाषाएँ-

(1) जापानी (जापान में) (Japanese)

(2) कोरियाई (कोरिया में) (Korean)

जापानी भाषाः जापान की भाषा है। बोलने वालों की संख्या 6 करोड़ है। इसमें 7वीं सदी ई. तक पुराना - साहित्य है । लिपि चीनी है। जापानी की नवीन लिपि बनाने का श्रेय एक संस्कृतज्ञ को है, अतः जापानी वर्णमाला को 'अ इ उ ए ओ' कहते हैं । जापानी के लिखित और मौखिक रूप में पर्याप्त अन्तर है। दोनों को एक करने का प्रयत्न चल रहा है।

2. कोरियाई भाषा कोरिया में बोली जाती है। बोलने वालों की संख्या लगभग 2 करोड़ है। इसमें चीनी शब्दों की अधिकता है । 15वीं सदी तक चीनी लिपि थी, अब इसकी अपनी लिपि है जो (देवनागरी) पर आश्रित है ।

मुख्य विशेषताएँ-

1. ये भाषाएँ अश्लिष्ट योगात्मक हैं ।
2. शब्द चीनी के तुल्य एकाक्षर नीं अपितु अनेकाक्षर हैं।
3. ध्वनि - समूह सरल है । संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग बहुत कम है ।
4. परसर्गों के द्वारा संबन्धतत्त्व का काम लिया जाता है। जैसे- ने = द्वारा । नो = का । नि = का। नि = में। उए = पर।

5. बहुवचन बनाने के लिए पुनरुक्ति की जाती है। यामा = पहाड़, यामा-यामा = कई पहाड़ ।

6. शब्द के सभी अक्षरों पर सामान्यतया समान बल दिया जाता है ।

7. स्त्री. या पुं. वाचक शब्द पहले रखकर लिंग-बोध कराया जाता है। जैसे - इनु (कुत्ता), ओ (पुं.), मे (स्त्री.), अतः ओ - इनु (कुत्ता), मे - इनु (कुतिया) ।

8. 'वचन' में मिश्रण है । को (बच्चा), दोनों (बहु.), को दोमो (कई बच्चे, एक बच्चा भी) ।

9. 'पुरुष' की धारणा भी अस्पष्ट है। मैं, हम, तुम आदि का प्रयोग नहीं होता। 'दोका ए इकिमासु का' (कहां जाता है? मैं, तू वह, कोई भी) ।

10. सभी पुरुषों में एक ही रूप रहता है। मैं, तू आदि नहीं लगते । प्रश्नवाचक 'का' लगाने से प्रश्न- बोधक हो जाता है।

अत्युत्तरी (हाइपरबोरी) परिवार

क्षेत्र- साइबेरिया का उत्तर-पूर्वी प्रदेश |

प्रमुख भाषाएँ-

1. युकगिर (आर्कटिक महासागर के किनारे, उत्तर-पश्चिम में)
2. कमचटका (या इटेल्मिश, कमचटका में)
3. चुकची (उत्तर-पूर्वी छोर में)
4. ऐनू (जापान के उत्तर में सखालिन द्वीपों में) ।

ये भाषाएँ एशिया के उत्तर-पूर्वी छोर में बोली जाती हैं। अत्यन्त उत्तर में होने से इन्हें 'अत्युत्तरी' कहते हैं, इन्हें 'पैलियो-एशियाटिक' (पुरा - एशियाई) भी कहते हैं। 'हाइपर-बोरी' का अर्थ है- हाइपर अत्यन्त, बोर - उत्तरी । इन भाषाओं का विशेष अध्ययन नहीं हुआ है ।

मुख्य विशेषताएँ-

1. संबन्धसूचक कारक - चिन्ह अन्त में जुड़ते हैं। जैसे- ऐनू में, कोत त्सि आदमी का घर ।

2. सहायक क्रियाओं से काल का निर्णय होता है। जैसे- ऐनू में, कु (मैं), किक (मारना), निसा (भूत काल) - कु मारता हूँ), कु किक निसा (मैंने मारा) ।

3. संख्याएँ दशमिक या विंशतिक प्रणाली से बनती हैं। जैसे- ऐनू में, रे - कशिम - वन (3+10 = 13), इन होने (4 x 20 = 80) ।

बास्क परिवार

क्षेत्र: फ्रांस और स्पेन की सीमा पर पेरिनीज पर्वत के पश्चिमी भाग में ।

प्रमुख भाषाएँ: इसमें 7 बोलियाँ हैं। इसके बोलने वाले लगभग 2 लाख लोग हैं।

मुख्य विशेषताएँ

1. बास्क अश्लिष्ट अन्त-योगात्मक भाषा है । क्रियारूप प्रश्लिष्ट हैं ।
2. विशेषण बाद में लगता है। जैसे जल्दी (घोड़ा), जल्दी अ (वह घोड़ा) ।
3. क्रियारूपों में बहुत जटिलता है । कर्तवाच्य नहीं है, कर्मवाच्य ही है।
4. कर्ता के स्थान के आधार पर वर्तमान और भूतकाल का निर्णय होता है । कर्ता अन्त में होगा तो वर्तमान काल । कर्ता आदि में होता तो भूतकाल । गु, गि (हिम) । जैसे- दकि- गु (हम इसे जानते हैं), गि- नकि (हम इसे जानते थे) ।

5. क्रिया - रूपों में लिंग - व्यवस्था मिलती है । संबोधित व्यक्ति के अनुसार क्रिया का लिंग होता है ।

जैसे- एज्त्तकित् = मैं इसे नहीं जानता ।

एज्त्तकि-अ-त् = मैं इसे नहीं जानता । हे पुरुष ।

एज्त्तकि-न-त् = मैं इसे नहीं जानता । हे स्त्री ।

इसी प्रकार आदरणीय एवं बच्चे आदि के लिए प्रथक प्रयोग है।

6. इसमें क्रिया और सर्वनाम मिले होते हैं। जैसे- दकार्किओत मैं इसको उसके पास ले जाता हूँ

7. समास हो सकते हैं। एक या अधिक मध्यगत वर्ण लुप्त हो जाते हैं।

जैसे- ओदेइ (बादल) + ओत्स् (आवाज) = ओदोत्स (गर्जन)

8. वाक्यविन्यास सरल है । क्रिया अन्त में आती है। ग्रे इसके वाक्य विन्यास को जटिल मानते हैं ।।

9. शब्दकोष बहुत सीमित है। अमूर्त भावों के लिए शब्द नहीं है ।

अरब (आदमी की बहिन), अहिज्प (औरत की बहिन) शब्द हैं, पर बहिन के लिए स्वतंत्र कोई शब्द नहीं है ।

10. सर्वनाम सेमिटिक - हैमिटिक परिवार से मिलते-जुलते हैं ।

सामी- हामी परिवार

(Semitic Hamitic Family)

भारोपीय

क्षेत्र:

(क) सामी: (एशिया में) अरब, ईराक, फिलिस्तीन, सीरिया, (अफ्रीका में) मिश्र, इथियोपिया, तुनिसिया, अल्जीरिया, मोरक्को ।

(ख) हामी : (अफ्रीका में) लीबिया, सोमालीलैंड, इथियोपिया |

प्रमुख भाषाएँ:

(क) सामी: अक्कदियन, कनानित, अरमाइक, अरबी, एबीसीनियन ।

(ख) हामी: लीबियन, मेराइटिक एथियोपिक (कुशीत), मिश्री ।

सेम और हेम नामक् दो भाइयों के नाम पर ये नाम पड़े हैं । बाइबिल की एक कथा के अनुसार हजरत नौह के दो पुत्र थे- सेम और हेम । ज्येष्ठ पुत्र सेम अरब, असीरिया और सीरिया आदि के निवासियों के आदि - पुरुष थे। दूसरे पुत्र हेम अफ्रीका के मिश्री, इथियोपिन आदि लोगों के आदि पुरुष थे ।

सामी परिवार की भाषाएँ दक्षिण-पश्चिमी ऐशिया में फैली हुई हैं। इस परिवार की मुख्य भाषा अरबी एशिया के अतिरिक्त अफ्रीका के उत्तरी भाग में फैली हुई है। मोरक्को से लेकर स्वेज तक इसका आधिपत्य है । मोरक्को और अल्जीरिया की राजभाषा अरबी ही रही ।

हामी अफ्रीका के लीबिया, सोमालीलैंड और इथियोपिया प्रदेशों में फैली हुई है। इस भाषा के बोलने वाले अफ्रीका के दक्षिणी और मध्य भाग में भी फैले हुए हैं। प्राचीन मिश्री भाषा में 3 हजार वर्ष पुराना साहित्य और प्राचीन अभिलेख मिलते हैं। प्राचीन मिश्री ने सामी और हामी के बीच पुल का काम किया है।

कुछ विद्वान् सामी- हामी को एक परिवार मानते हैं, कुछ दो पथक् परिवार। परन्तु समानताएँ अधिक हैं, अतः एक परिवार मानना उचित है।

सामी- हामी परिवार की समानताएँ

1. दोनों श्लिष्ट योगात्मक और अन्तर्मुखी हैं । आदि, मध्य अन्त में भी प्रत्यय लगते हैं। स्वरों के परिवर्तन के द्वारा सभी अर्थ में परिवर्तन होता है ।

2. काल की अवधारणा गौण है । क्रिया 'कब हुई' पर बल न होकर 'पूरी हुई या नहीं हुई' पर बल अधिक है।

3. दोनों में बहुवचन - सूचक प्रत्ययों का आधार एक ही है ।

4. दोनों में स्त्रीलिंग - बोधक प्रत्यय 'त' है ।

5. दोनों में लिंग-भेद स्त्री-पुरुष पर आधारित न होकर अन्य कारणों पर निर्भर है।

6. दोनों में सर्वनाम शब्दों का आधार निश्चितरूप से एक है ।

सामी- हामी परिवार की विषमताएँ

1. सामी परिवार में धातुएँ 3 व्यंजनों वाली हैं, हामी में नहीं ।

2. सामी में धातु के अन्दर स्वर- परिवर्तन से रूपभेद और अर्थ-भेद होता है, हामी में ऐसा नहीं है।

सामी (सेमिटिक) परिवार की मुख्य विशेषताएँ

1. धातुएँ (अर्थतत्त्व, Root) 3 व्यंजनों वाली हैं। जैसे- क् त् ब्, स् ज् द, स् ल् म् । परन्तु अपवाद के रूप में कुछ धातुएँ दो व्यंजन वाली भी हो गई हैं।

2. धातुओं के बीच में स्वर जोड़कर शब्द बनाए जाते हैं। जैसे- क् त् ब्> किताब, कुतुब, कातिब। स् ल् म् > सलीम, इस्लाम, मुस्लिम |

3. अथा का प्रकट करन क लए आदि और अन्त में भी प्रत्यय जोड़े जाते हैं । जैसे - क् त् ब् > मक्तब (स्कूल), मक्तूब (लिखा हुआ, पत्र) । स् ल् म् > मुसल्लम (माना हुआ), सलामती (सुरक्षा), मुस्लिमा (मुस्लिम स्त्री) । ज ल म > मुज़लिमाना (अत्याचारपूर्ण) ।

4. शब्दों का लिंग व्याकरण पर निर्भर है। स्त्रीलिंग - प्रत्यय 'त' है ।

5. तीन कारक हैं- कर्ता, कर्म, सम्बन्ध । इनसे अन्य कारकों का भी काम लिया जाता है ।

6. सम्बन्ध-वाचक प्रत्ययों का योग । सम्बन्ध - वाचक सर्वनाम शब्द के अन्त में ही जोड़ दिए जाते हैं। कतब्-इ (मेरी किताब) । हिब्रू में, एल् - इ (मेरे भगवान्) इ = मेरा ।

7. सामी में समास का अभाव है।

8. प्राचीन सामी संयोगात्मक थी । कारक आदि के प्रत्यय जुड़े होते थे अब वियोगात्मक हो गई है। कारक-चिन्ह का काम निपात करते हैं । ये स्वतन्त्र रहते हैं वियोगात्मक में वर्तमान हिब्रू मुख्य है ।

हामी (हैमिटिक) परिवार की मुख्य विशेषताएँ

1. सम्बन्धतत्व का योग आदि और अन्त दोनों जगह होता है। संज्ञा शब्दों में प्रत्यय प्रायः अन्त में लगते हैं और क्रियारूपों में आदि - अन्त दोनों स्थानों पर । इसमें प्रेरणार्थक, पुनः पुनः अर्थवाले और आत्मनेपद के समकक्ष भी रूप हैं। सोमाली भाषा में द्वित्व से पुनः पुनः अर्थ का बोध होता है। जैसे- लब (मोड़ना), लब-लब (बारबार मोड़ना) । कभी कुछ स्वरभेद भी हो जाता है । जैसे- गल (जाना), गेलि (अन्दर रखना) ।

2. काल का विचार महत्वपूर्ण नहीं है । क्रिया-पद क्रिया की पूर्णतया या अपूर्णता बताते हैं । काल का सूक्ष्म बोध सहायक क्रियाएँ कराती हैं।

3. लिङ्ग सबलता, निर्बलता, बड़ा-छोटा आदि पर निर्भर है । पुरुषत्व और स्त्रीत्व पर नहीं ।

उदाहरण- पुंलिंग	स्त्रीलिंग
तलवार । शिला। हाथी ।	चाकू । पत्थर । खरगोश

चाकू (स्त्री.), पत्थर पुं.), खरगोश (स्त्री.) आकार में छोटे हैं। अत स्त्रीलिX हैं। शिला, हाथी आकर में बड़े हैं, इसलिए पुलिंग हैं। दूसरा प्रकार है- आदि अक्षर कंठ्य (पुं.), आदि अक्षर दन्त्य (स्त्री.) । गल्ल भाषा में - कंक (तेरा, पुं.), तंते (तेरी, स्त्री.) । इसी तरह तगरो (अच्छा, पुं.), तगरी (अच्छी, स्त्री.) में आदि-व्यंजन के भेद से पुं. और स्त्री. है

4. वचन प्रायः एकवचन और बहुवचन हैं। 'नम' भाषा में द्विवचन भी है। बहुवचन भी दो प्रकार का है - 1. सामान्य बहुवचन, 2. समूहात्मक बहुवचन। रूप भी अलग हैं। जैसे- लिसा (आँसू, बहु.), लिसने (आँसू की धारा) बिला (पतिंगा, एक.), बल् (पतिंगे), बिल्ले (पतिंगों का समूह) ।

सामी और भारोपीय में विषमताएँ

सामी	भारोपीय
1. धातुएँ 3 व्यंजन वाली हैं।	1. ऐसी धातुएँ नहीं हैं।
2. धातुओं के अन्दर प्रत्यय |	2. धातुओं के अन्त में प्रत्यय |
3. समास का अभाव।	3. समास है ।
4. आदि-प्रत्यय से प्रेरणार्थक आदि ।	4. अन्त में प्रत्यय से णिजन्त आदि ।